कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



हाथ का श्रम और वाष्प शक्ति

- विक्टोरिया कालीन ब्रिटेन में मानव श्रम की कोई कमी नहीं थी।
- गरीब किसान और बेकार लोग कामकाज की तलाश में बड़ी संख्या में शहरों को जाते थे।
- जब श्रमिकों की बहुतायत होती है तो वेतन गिर जाते हैं।
- इसलिए उद्योगपतियों को न तो श्रमिकों की कोई कमी थी और ना ही उनके वेतन के मद में कोई भारी लागत लगती थी।
- उन्हें ऐसी मशीनों में कोई दिलचस्पी नहीं थी जिसके कारण उन्हें मजदूरों से छुटकारा मिल जाये और उन मशीनों के कारण बहुत ज्यादा खर्चा आने वाला हो।

मौसमी आधार पर मजदूरों की माँग

- बहुत सारे उद्योगों में श्रमिकों की माँग मौसमी आधार पर घटती बढ़ती रहती थी।
- गैसघरों और शराबखानों में जाड़ों के दौरान खासा काम रहता था। इस दौरान उन्हें ज्यादा मजदूरों की जरूरत होती थी।
- क्रिसमस के समय बुक-बाइंडरों और प्रिंटरों को भी दिसम्बर से पहले अतिरिक्त मजदूरों की दरकार रहती थी।
- बंदरगाहों पर जहाजों की मरम्मत और साफ-सफाई व सजावट का काम भी जाड़ों में ही किया जाता था।
- जिन उद्योगों में मौसम के साथ उत्पादन घटता बढ़ता रहता था वहाँ उद्योगपति मशीनों की बजाय मजदूरों को ही काम पर रखना पसंद करते थे।

विल थोर्न मौसमी काम की तलाश में निकलने वाले मज़दूरों में से एक थे।
उन्होंने ईंटें ढोईं और अन्य छोटे-मोटे काम किए।
वह बताते हैं कि नौकरी के इच्छुक किस तरह पैदल लंदन जाते थे –
''मैं हमेशा लंदन जाना चाहता था। मेरी इच्छा हमेशा एक पुराने दोस्त के खतों को पढ़कर और मज़बूत हो जाती थी... वह ओल्ड केंट रोड गैस वर्क्स में काम करता है... आखिरकार मैंने जाने का मन बना लिया... नवंबर 1881 में।
दो दोस्तों के साथ मैं सफर पर निकल पड़ा। हम इस आशा से भरे हुए थे कि वहाँ पहुँचते ही अपने

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

दोस्त की मदद से हमें रोज़गार मिल जाएगा।
जब हम निकले तो हमारे पास खास कोई पैसा नहीं था। लंदन तक के रास्ते के लिए खाने और रात को ठहरने का पैसा भी नहीं था।
कई दिन हम 20 मील और कई बार उससे कम पैदल चलते थे... तीसरे दिन हमारे पैसे खत्म हो गए... दो रातें हमने बाहर ही सोते हुए गुजारीं... एक बार भूसे के ढेर तले और एक बार खेत में बने एक शेड में...
लंदन पहुँचने पर मैंने अपने दोस्त को ढूँढ़ने का प्रयास किया। ...लेकिन नाकामयाब रहे। पैसा तो जा ही चुका था। इसलिए अब हमारे पास देर रात तक यहाँ-वहाँ भटकते रहने के अलावा और कोई चारा नहीं था।
शाम को हम सोने का कोई ठिकाना ढूँढ़ते थे। हमने एक पुरानी इमारत ढूँढ़ी और एक रात उसी में बिताई। अगले दिन इतवार था।
दोपहर बाद हम ओल्ड केंट गैस वर्क्स पहुँचे। वहाँ हमने काम के लिए अर्ज़ी दे दी।
यह देखकर मेरे अचरज की सीमा न रही कि हम जिसे ढूँढ़ रहे थे वह वहीं काम कर रहा था। उसने फोरमैन से बात की और मुझे नौकरी पर रख लिया गया।'

काम की तलाश में निकले लोग,
दि इलस्ट्रेटड लंदन न्यूज, 1879



- कुछ लोग छोटीमोटी चीजें बेचते और अस्थायी काम तलाशते हुए हमेशा एक जगह से दूसरी जगह भटकते रहते थे।

इनसानी निपुणता

- बहुत सारे उत्पाद ऐसे थे जो केवल हाथ से ही तैयार किये जा सकते थे।
- मशीनों से तो एक जैसे तथा तय किस्म के उत्पाद ही बड़ी संख्या में बनाये जा सकते थे।
- लेकिन बाजार में अकसर बारीक डिजाइन और खास आकारों वाली चीजों की काफी माँग रहती थी।
- उदाहरण के लिए :- 19वीं सदी के मध्य में ब्रिटेन में 500 तरह के हथोड़े तथा 45 तरह की कुल्हाड़ियां बनाई जा रही थीं।
- इन्हें बनाने के लिए मशीनों की नहीं बल्कि इनसानी निपुणता की ज़रूरत थी।
- विक्टोरिया कालीन ब्रिटेन में उच्च वर्ग के लोग जैसे-कुलीन और पूँजीपति वर्ग, हाथों से बनी चीज़ों को तरजीह देते थे।
- हाथों से बनी चीज़ों को परिष्कार और सुरुचि का प्रतीक माना जाता था।
- उनकी फिनिश अच्छी होती थी।
- उनको एक-एक करके बनाया जाता था और उनका डिज़ाइन अच्छा होता था।
- मशीनों से बनने वाले उत्पादों को उपनिवेशों में निर्यात कर दिया जाता था।

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

लोहे की फैक्ट्री में मजदूर, उत्तर-पूर्व इंग्लैंड, विलियम बेल स्कॉट की पेंटिंग, 1861



- 19वीं सदी के आखिर में बहुत सारे कलाकार मजदूरों को आदर्श रूप में प्रस्तुत करने लगे थे।
- उन्हें राष्ट्र के लिए पीड़ा झेलते हुए दिखाया जाता था।

दोस्त लगा हुआ है तो नौकरी मिलने की संभावना ज़्यादा रहती थी।

- सबके पास ऐसे सामाजिक संपर्क नहीं होते थे।
- रोज़गार चाहने वाले बहुत सारे लोगों को हफ्तों इंतज़ार करना पड़ता था।
- वे पुलों के नीचे या रैन-बसेरों में रातें काटते थे।
- कुछ बेरोज़गार शहर में बने निजी रैनबसेरों में रहते थे।
- बहुत सारे निर्धन कानून विभाग द्वारा चलाए जाने वाले अस्थायी बसेरों में रुकते थे।

बेघर और भूखे, सेमुअल ल्यूक फिल्ट्स की पेंटिंग-1874



- इस पेंटिंग में दर्शाया गया है कि लंदन में बेघर लोग एक कामघर (Work-house) में रात भर ठहरने के लिए अर्जी दे रहे हैं।

- जिन देशों में मज़दूरों की कमी होती है वहाँ उद्योगपति मशीनों का इस्तेमाल करना ज़्यादा पसंद करते हैं ताकि कम से कम मज़दूरों का इस्तेमाल करके वे अपना काम चला सकें।
- 19वीं सदी के अमेरिका में यही स्थिति थी। लेकिन ब्रिटेन में कामगारों की कोई कमी नहीं थी।

मजदूरों की जिंदगी

- बाज़ार में श्रम की बहुतायत से मज़दूरों की ज़िंदगी भी प्रभावित हुई।
- जैसे ही नौकरियों की खबर गाँवों में पहुँची सैकड़ों की तादाद में लोगों के हुजूम शहरों की तरफ चल पड़े।
- नौकरी मिलने की संभावना यारी-दोस्ती, कुनबे-कुटुंब के जरिए जान-पहचान पर निर्भर करती थी।
- अगर किसी कारखाने में आपका रिश्तेदार या

- ये आश्रय-स्थल, बेसहारा सड़कों पर रहने वाले आवाराओं और यहाँ वहाँ भटकते लोगों के लिए गरीब कानून आयुक्त की देखरेख में चलाये जाते थे।
- इन वर्कहाउसों में रहना जिल्लत की बात थी। हरेक की डॉक्टरी जाँच करके ये पता लगाया जाता था कि व्यक्ति बीमार तो नहीं है, उनका शरीर पूरी तरह साफ है या नहीं, उसके कपड़े मैले तो नहीं है।
- उन्हें कठोर परिश्रम भी करना पड़ता था।

मौसमी काम और मजदूर

- बहुत सारे उद्योगों में मौसमी काम की वजह से

Download on Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

कामगारों को बीच-बीच में बहुत समय तक खाली बैठना पड़ता था।

- काम का सीज़न गुजर जाने के बाद गरीब दोबारा सड़क पर आ जाते थे।
- कुछ लोग जाड़ों के बाद गाँवों में चले जाते थे जहाँ इस समय काम निकलने लगता था।
- लेकिन ज़्यादातर शहर में ही छोटा-मोटा काम ढूँढ़ने की कोशिश करते थे जो 19वीं सदी के मध्य तक भी आसान काम नहीं था।

मजदूरों के वेतन

- 19वीं सदी की शुरुआत में वेतन में कुछ सुधार आया।
- लेकिन इससे मज़दूरों की हालत में सुधार हुआ या नहीं यह पता नहीं चलता। क्योंकि आंकड़े सही स्थिति नहीं दर्शा पाते।
- अलग-अलग व्यवसायों के औसत आंकड़ों का फर्क तथा प्रतिवर्ष होने वाले उतार-चढ़ाव छिपे रह जाते थे।
- मिसाल के तौर पर, जब लंबे नेपोलियनी युद्ध के दौरान कीमतें तेज़ी से बढ़ीं तो मज़दूरों की आय के वास्तविक मूल्य में कमी आ गई।
- इसका अर्थ यह है कि अब उन्हें वेतन तो पहले जितना मिलता था लेकिन उससे वे पहले जितनी चीज़ें नहीं खरीद सकते थे।
- मज़दूरों की आमदनी सिर्फ प्रतिदिन के वेतन से ही नहीं लगा सकते थे रोजगार की अवधिभी बहुत महत्वपूर्ण थी यानि उन्होंने कितने दिन काम किया है।
- इससे औसत दैनिक आय का पता लगता था।

बेरोजगारी

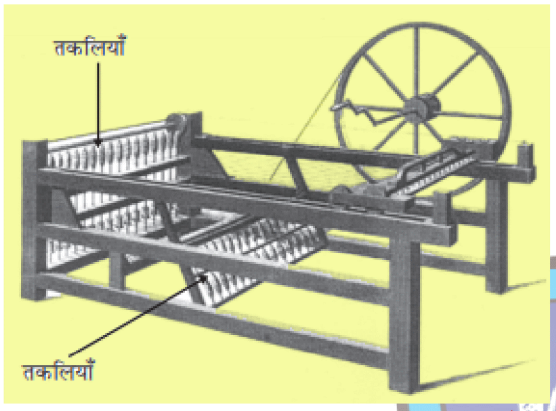
- 19वीं सदी के मध्य में सबसे अच्छे हालात में भी लगभग 10 प्रतिशत शहरी आबादी निहायत गरीब थी।
- 1830 के दशक में आई आर्थिक मंदी जैसे दौर में बेरोज़गारों की संख्या विभिन्न क्षेत्रों में 35 प्रतिशत से 75 प्रतिशत तक पहुँच जाती थी।
- बेरोजगारी की आशंका के कारण मज़दूर नयी प्रौद्योगिकी से चिढ़ते थे।
- 1764 में जेम्स हारग्रीब्ज ने स्पिनिंग - जेनी नामक ऊन कातने की मशीन बनाई तो इस मशीन ने कताई की प्रक्रिया तेज कर दी और मजदूरों की माँग घटा दी।
- एक पहिये को घुमाकर मजदूर बहुत सारी तकलियों को घुमा देता था और एक साथ कई धागे बनने लगते थे।
- अब जब ऊन उद्योग में इस मशीन का इस्तेमाल शुरू किया गया तो हाथ से ऊन कातने वाली औरतें इस तरह की मशीनों पर हमला करने लगीं।
- जेनी के इस्तेमाल पर यह टकराव लंबे समय तक चलता रहा।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

स्पिनिंग जेनी, टी.ई. निकल्सन द्वारा बनाया गया चित्र 1835



- एक ही पहिये से कई सारी तकलियाँ घूमने लगती थी।

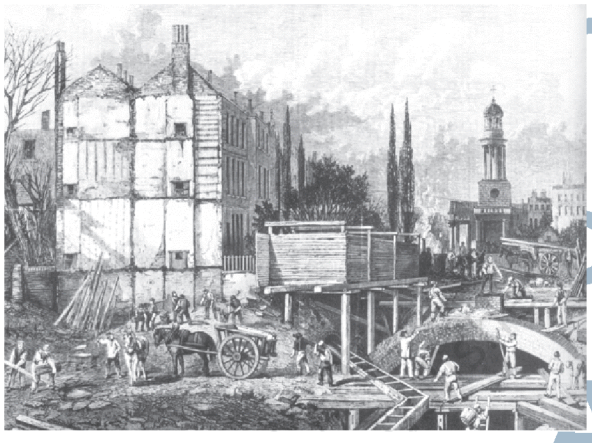
एक मजिस्ट्रेट ने 1790 में एक ऐसी घटना के बारे में बताया जिसमें उसे मज़दूरों के हमले से निर्माता की संपत्ति की रक्षा के लिए बुलाया गया था :

''कोयला मज़दूरों और उनकी बीवियों के गिरोह की परेशानी के कारण... क्योंकि उनकी बीवियों का काम स्पिनिंग इंजन के कारण छिन गया था... शुरू में वे बड़े अड़ियल ढंग से आगे बढ़े।

ऊन उत्पादन में अभी अपनाई गई मशीनों को वे टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहते थे क्योंकि उनकी वजह से शारीरिक श्रम की माँग घटने वाली थी। औरतों ने हंगामा मचाया हुआ था। आदमियों को समझाना आसान था इसलिए कुछ खींचतान के बाद उन्हें शांतिपूर्वक घर जाने के लिए तैयार कर लिया गया।

- 1840 के दशक के बाद शहरों में निर्माण की गतिविधियाँ तेज़ी से बढ़ीं।
- लोगों के लिए नए रोज़गार पैदा हुए।
- सड़कों को चौड़ा किया गया,
  नए रेलवे स्टेशन बने,
  रेलवे लाइनों का विस्तार किया गया,
  सुरंगें बनाई गईं,
  निकासी और सीवर व्यवस्था बिछाई गई, नदियों के तटबंध बनाए गए।
- परिवहन उद्योग में काम करने वालों की संख्या 1840 के दशक में दोगुना और अगले 30 सालों में एक बार फिर दोगुना हो गई।

मध्य लंदन में निर्माणधीन एक उथला भूमिगत रेलवे-स्टेशन (इलेस्ट्रेटेड - टाइम्स - 1868)



- 1850 के दशक से पूरे लंदन में रेलवे स्टेशन बनने लगे थे।
- इसका मतलब था कि सुरंगे बनाने, बल्लियों की पाड़ लगाने, ईंट और लोहे का काम करने के लिए बहुत सारे मज़दूरों की ज़रूरत थी।
- रोज़गार चाहने वाले एक निर्माण स्थल से दूसरे निर्माण स्थल तक जाते रहते थे।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here